

सृजय कृत टोपी



एक दिन गवरा और गवरइया में कपडों को लेकर बहस हुई



गवरे ने कहा—कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती
खूबसूरती ढंक जो जाती है। अब तू ही सोच! अभी तो
तेरी सुघड़ काया का एक—एक कटाव मेरे सामने है,
रोंवे—रोंवे की रंगत मेरी आँखों में चमक रही है। अब अगर
तू मानुस की तरह खुद को ढंक ले तो तेरी सारी
खूबसूरती ओझल हो जाएगी कि नहीं?

गवरइया ने कहा—कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं,
मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी।



टोपी बनवाने के लिए गवरइया क्रमशः धुनिया,
कोरी, बुनकर और दर्जी के पास गई



श्राजा को देखकर चिल्लाई—“मेरे
सिर पर टोपी, राजा के सिर पर
टोपी नहीं... राजा के सिर पर टोपी
नहीं”



उसकी सुंदर टोपी देखकर राजा को उससे ईर्ष्या होने लगी ।



राजा ने टोपी बनाने वालों को दरबार में बुलाया ।



उन सभी के जवाब सुनकर राजा तो वाकई अकबका गया था।
एक तो तमाम कारीगरों ने उसकी मदद की
थी। दूसरे, इस टोपी के सामने अपनी टोपी की कमसूरती।
तीसरे, खजाने की खुलती पोल। इस पाखी को कैसे पता चला
कि मान घट गया है? तमाम बेगार करवाने, बहुत सख्ती से
लगान वसूलने के बावजूद राजा का खजाना खाली ही
रहता था। इतना ऐशोआराम, इतनी लशकरी, इतने लवाजिमे का
बोझ खजाना संभाले भी तो कैसे?



अंत में गवरइया ने फिर से टोपी पहन ली और उड़-उड़कर कहने लगी, यह राजा तो डरपोक है। निरा डरपोक! मुझसे डर गया। तभी तो इसने मेरी टोपी लौटा दी। राजा ने अपनी इज्जत बचाने के लिए कहा—कौन इस मुँहफट के मुँह लगे? क्यों मंत्री जी, कहकर राजा ने अपनी टोपी कसकर पकड़ ली।

